हिन्दी अकादमी, हैदराबाद ISSN 2277 - 9264
यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित पत्रिका (क्रमांक-120)

संकल्य

51 वर्षों से निरंतर दक्षिण से प्रकाशित

शोध और सृजन की त्रैमासिक पत्रिका

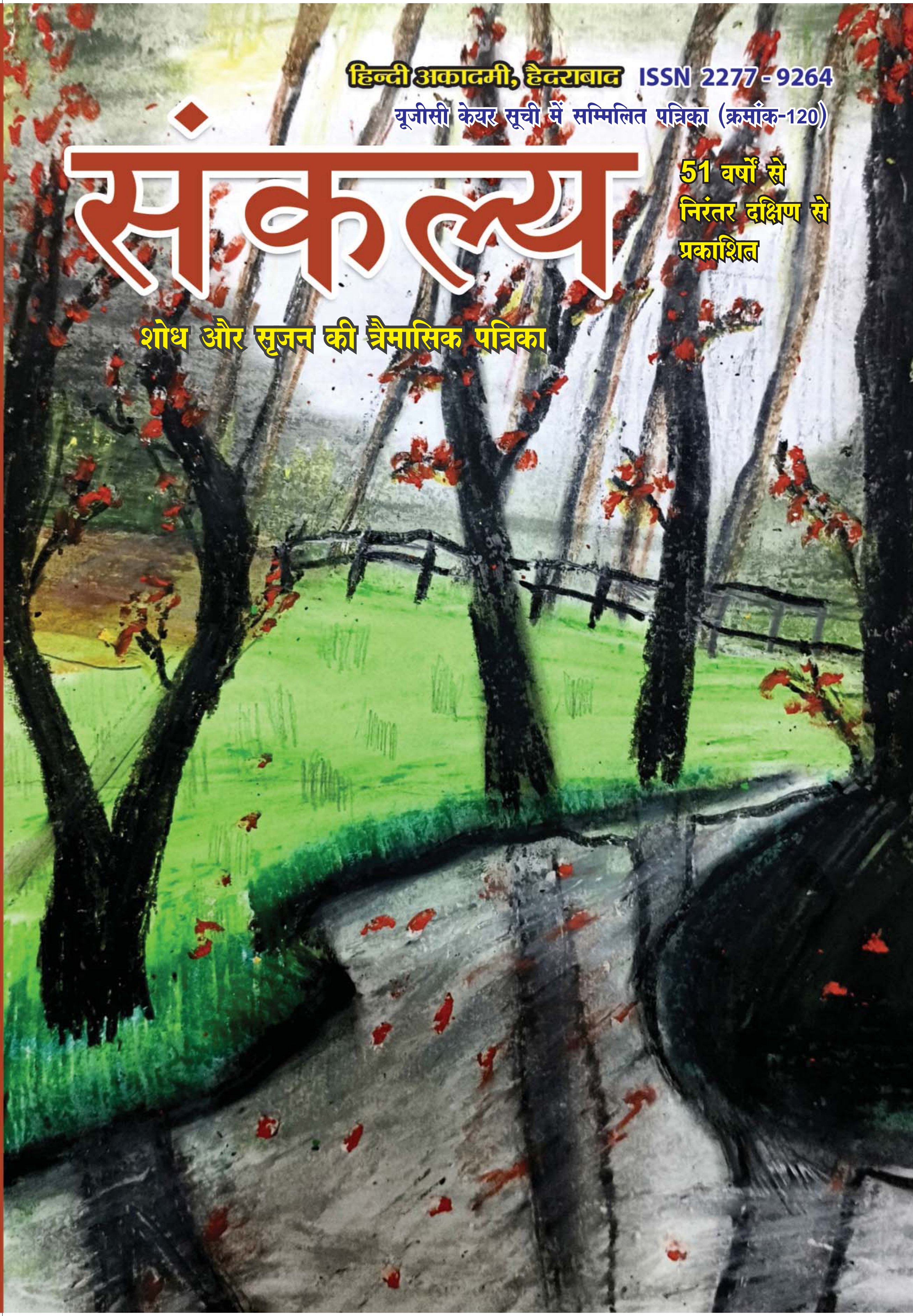

माननीय कुलपति प्रोफेसर अविनाश खरे जी से सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक के हिन्दी विभाग द्वारा प्रकाशित 'पूर्वोत्तर प्रभा' पत्रिका के लिए शुभकामना संदेश प्राप्त करते हुए प्रो. प्रदीप के शर्मा एवं डॉ. गोरख नाथ तिवारी।

सिक्किम वि.वि. के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित विशेष बैठक में भाग लेते हुए हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व समकुलपति एवं संकल्य पत्रिका के प्रधान संपादक प्रो. आर.एस. सर्राजु जी एवं अन्य गणमान्य प्राध्यापक गण।

जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में सह-आचार्य के रूप में पद भार ग्रहण करने पर डॉ. शशिकांत मिश्र को बधाई देते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. भारत भूषण जी व अन्य प्राध्यापकगण।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्राख्यात कवि श्री संतोष कुमार झा को सी.एम.डी. बनने पर बधाई देते हुए डॉ. गोरख नाथ तिवारी।

ISSN : 2277-9264

यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल

मधुसूदन चतुर्वेदी एवं प्रो. बैजनाथ चतुर्वेदी कीर्ति स्तंभ

स्थापना वर्ष : 1956

संकल्य

त्रैमासिक

वर्ष : 51 : अंक–4, अक्टूबर–दिसंबर, 2023

प्रधान संपादक

प्रो. आर. एस. सर्राजु

प्रेरणास्रोत

विवेकी राय एवं

प्रो. टी. मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार

सुश्री कविता ठाकुर

संपादक

डॉ. गोरखनाथ तिवारी

डॉ. शशिकांत मिश्र

परामर्शदाता मंडल

प्रो. टी. आर. भट्ट
प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल
प्रो. दिलीप सिंह
प्रो. तेजस्वी कट्टीमनी
प्रो. नंद किशोर पांडेय
प्रो. शुभदा वांजपे
प्रो. जयंत कर शर्मा
प्रो. प्रभाकर त्रिपाठी
श्री ओम धीरज
श्री रूद्रनाथ मिश्र

प्रबंध संपादक

रेखा तिवारी

प्रूफ रीडर

प्रमोद कुमार मणि त्रिपाठी

सम्मानीय संरक्षक

श्री राजेश्वर तिवारी, आई.ए.एस.
श्री लाल जी राय, आई.ए.एस.
श्री जितेंद्र रेड्डी, पूर्व संसद सदस्य
प्रो. आर. के. मिश्रा (विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री)

प्रकाशक

डॉ. गोरखनाथ तिवारी

सचिव : हिंदी अकादमी, हैदराबाद

संपादकीय कार्यालय

प्लॉट नं. 10, रोड नं. 6, समतापुरी कॉलोनी
न्यू नागोल के पास, हैदराबाद– 500 035 (तेलंगाना)

संकल्य (त्रैमासिक)

- प्रकाशित सामग्री की रीति–नीति या विचारों से **हिंदी अकादमी, हैदराबाद** या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।
- **'संकल्य'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल हैदराबाद न्यायालय के अधीन होंगे।
- **हिंदी अकादमी** तथा हिंदी सेवा के लिए समर्पित **'संकल्य'** त्रैमासिक के सभी पद अवैतनिक हैं।

शुल्क भेजने का पता :

मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट **हिंदी अकादमी** के नाम

ऑनलाइन संकल्य की सदस्यता शुल्क भेजने हेतु पृष्ठ 111 पर बैंक डिटेल देखें।

सचिव : डॉ. गोरखनाथ तिवारी
फ्लैट नं. 258/ए, ब्लॉक नं.11, तीसरी मंजिल,
जनप्रिया टाउनशिप, मल्लापुर
हैदराबाद– 500 076 (तेलंगाना), ई–मेल : **hindiakadami@gmail.com**
फोन : 09441017160/9032117105

मूल्य :

एक अंक का मूल्य रु. 125/–
वार्षिक : रु.500/–, **आजीवन सदस्यता** : रु.6,000/– (व्यक्तिगत),
संस्थागत आजीवन : रु.7,500/–, संस्थाओं के लिए : **वार्षिक** सदस्यता : रु. 800/–,
संरक्षक सदस्यता शुल्क : रु.7,500/–

आवरण चित्र

- **सुरभि राय, विश्वास तिवारी** (चित्रकार)

मुद्रक :

कर्षक आर्ट प्रिंटर्स
40–ए.पी.एच.बी.
विद्यानगर, हैदराबाद–500 044
फोन : 040–27618261, 27653348

संकल्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु Kruti Dev 010 या Unicode Mangal फ़ांट में सामग्री टाइप करवाकर ई–मेल : hindiakadami@gmail.com पर भेजें।

ISSN 2277-9264/यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल RNI No. 25388/74

संकल्य त्रैमासिक

वर्ष : 51 : अंक–4, अक्टूबर–दिसंबर, 2023

अनुक्रम Contents

संपादकीय

नई शिक्षा नीति और हिंदी : प्रो. आर. एस. सर्राजु 05

साक्षात्कार

डॉक्टर मोहन गुप्ता के साथ डॉ. शशिकांत मिश्र की बातचीत 06

कविता

1. ओम धीरज की दो कविताएँ 09
2. संतोष कुमार झा की दो कविताएँ : 10
3. हाँ तुम भूल ही तो जाते हो : ज्योति मिश्रा 11

आलेख

4. भारतीय साहित्य की परिकल्पना और अनुवाद : प्रो. प्रदीप के. शर्मा 12
5. जम्मू–कश्मीर का सामाजिक व सांस्कृतिक वैविध्य : डॉ. रत्नेश कुमार यादव, शाश्वत आनंद 16
6. कृषक जीवन की व्यथा–कथा 'अधबुनी रस्सी एक परिकथा' : प्रो. अखिलेश कुमार शंखधर 20
7. स्त्री–चित्त के बहाने कबीर के काव्य का अवलोकन : प्रो. चंद्रकांत सिंह 24
8. हिंदी उपन्यास : सांस्कृतिक संदर्भ (आदिवासी जीवन केंद्रित हिंदी उपन्यासों के संदर्भ में) : प्रो. श्यामराव राठोड़ 30
9. समकालीन कविता और यथार्थ : प्रो. भारत भूषण, प्रभाकर कुमार 37
10. मुंबइया हिंदी और मुंबई परिवेश से संबंधित समकालीन हिंदी उपन्यास : प्रो. सदानंद भोसले, जाधव पोपट यशवंत 43
11. सामाजिक परिदृश्य का यथार्थ : डॉ. सिन्धु जी नायर 49
12. भारत में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव : एक अवलोकन : डॉ. सोनिया एस. 55
13. साहित्य के परिप्रेक्ष्य में कालबोध और सौंदर्यबोधात्मक काल : डॉ. अमिय कुमार साहु 58
14. रामधारी सिंह दिनकर : बहुआयामी लेखक : प्रो. अर्चना झा 62
15. उषा प्रियवंदा की कहानियों में आधुनिक भावबोध : डॉ.विजय हिंदुराव पाटील 66

16. हिंदी साहित्य में पूर्वोत्तर और गैर पूर्वोत्तर राज्यों में होने वाले शोध का तुलनात्मक अध्ययन : डॉ. नवीन नंदवाना 69
17. बदरीविशाल पित्ती जी के सपने की 'कल्पना' : डॉ. गोरख नाथ तिवारी 76
18. राधावल्लभ संप्रदाय के कृष्ण भक्ति काव्य : गौड़ीय दर्शन : डॉ. शशिकांत मिश्र 82
19. हिंदी कहानी के विकास में बंग महिला का योगदान : डॉ. दिनेश साहू 88
20. आदिवासी स्वशासन प्रणाली 'जुम्सा' : एक अध्ययन : डॉ. चुकी भूटिया 92
21. इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की स्त्री कहानियों में नये जीवन मूल्य : डॉ.मुदनर दत्ता सर्जेराव 95
22. प्रवासी कहानीकार सुषम बेदी की कहानियों में चित्रित स्त्री : डॉ. अदनान बिस्मिल्लाह 99
23. अमरकांत की कहानियाँ और स्वातंत्र्योत्तर जनजीवन : डॉ. लोङ्जम रोमी देवी 103
24. निर्मल वर्मा की कहानियों में चित्रित जिजीविषा और मृत्युबोध : डॉ.शिवानंद हिरगप्पा कोलि 108
25. नीरजा माधव कृत 'यमदीप' उपन्यास में चित्रित किन्नर जीवन : डॉ. नसरीन बानो 112
26. रजनी गुप्त के उपन्यासों में आधुनिकता : डॉ. फ़राह जीमल 116
27. कागज की नाव' उपन्यास में अंधविश्वास : स्वालियाबेगम आर.कोप्पल, प्रो.राजु एस.बागलकोट 122
28. ललित निबंधों की परंपरा और कुबेरनाथ राय का लेखन : अनुपम भट्ट, प्रो. सत्यकेतु सांकृत 126
29. कृष्णा अग्निहोत्री की वैचारिकता में वृद्धों की उभरती समस्या : कविता सैनी 130
30. जयश्री रॉय कृत उपन्यास 'इकबाल' का विश्लेषणात्मक अध्ययन : हीना मजीद 134
31. हरियाणवी संस्कृति में लोक साहित्य की अवधारणा : रमा रानी 137
32. 'यह अंत नहीं' कहानी में युवा दलित–वर्ग की चेतना का विकास : श्वेता रानी 142
33. हिंदी कथा साहित्य और किन्नर विमर्श : कविता चूर 146
34. धरणीधर औवारी के 'मैहुर' उपन्यास में आंचलिकता : सूर्जलेखा ब्रह्म 150
35. वैश्विक स्तर पर हिंदी साहित्य का अनुवाद : ललिता देवी 154
36. संजीव कृत 'फाँस' उपन्यास में किसान–जीवन की त्रासदी : पूनम पाधा 157

संपादकीय

नई शिक्षा नीति और हिंदी

प्रो. आर. एस. सर्राजु

नई शिक्षा नीति का निर्धारण भारत की 21वीं सदी की आवश्यकताओं को दृष्टि में रख कर किया गया है। यह शिक्षा नीति भारत में सुस्थिर और समावेशी ज्ञानाधारित समाज के विकास की दिशा में शिक्षा प्रदान करते हुए भारतीय समाज को स्वयं समृद्ध बनाने में और प्रत्यक्ष रूप में सहायक होगी। इस शिक्षा नीति को भारतीय समाज की आकांक्षाओं और लक्ष्यों के अनुरूप भारतीय परंपराओं और मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में तैयार किया गया है।

भारतीय भाषाओं में और मुख्य रूप से हिंदी में शिक्षा का लक्ष्य आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करना है। कहा गया है कि **'सर्वं शब्देन भासते'**। हिंदी और भारतीय भाषाओं के माध्यम से भारतीय जीवन दर्शन को आगे ले जाने वाली नीति के रूप में वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति का निर्धारण किया गया है। इस शिक्षा नीति में ज्ञान प्राप्त करने के लिए भाषाई माध्यम के महत्व को सही ढ़ंग से पहचाना गया है। मातृभाषा और स्थानीय भाषा में शिक्षा के साथ–साथ भारतीय बहुभाषिक स्थितियों को दृष्टि में रखते हुए त्रिभाषा सूत्र को उदार दृष्टि से अपनाने की सलाह दी गयी है। शिक्षा माध्यम के रूप में घर की भाषा, मातृभाषा, स्थानीय भाषा, क्षेत्रीय भाषा को स्वीकार किया गया है। विज्ञान सहित सभी विषयों में उच्चतर गुणवत्ता वाली पाठ्य–पुस्तकों को घरेलू भाषाओं और हिंदी सहित मातृभाषाओं में उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। इस संदर्भ में राजभाषा हिंदी और भारतीय भाषाओं के संबंधों को सुदृढ़ बनाने के प्रति भी ध्यान देने की जरूरत है। हिंदी और भारतीय भाषाओं में ज्ञान के अंतरण को दृष्टि में रखकर 'इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एण्ड इंटर प्रिटेशन' की स्थापना करने का निर्णय लिया गया है। यह निर्णय स्वागत करने योग्य है। भारतीय भाषाओं के अध्ययन और अनुसंधान के क्षेत्र में काम करने वाले विद्यार्थियों और शोधार्थियों को भी छात्र वृत्तियाँ देकर भारतीय भाषाओं में अध्ययन की दिशा में प्रोत्साहन दिया जा सकता है। भारतीय भाषाओं में शिक्षा देने पर भारत के पिछड़े हुए समुदाय विकास की प्रक्रिया में आत्मविश्वास के साथ भाग ले सकते हैं और भारतीय जनतंत्र भी इस प्रक्रिया के तहत सुदृढ़ बन जाता है। हिंदी के विद्वानों और विशेषज्ञों को इस दिशा में विशेष ध्यान देने की आवश्यकाता है। विद्यार्थी हिंदी भाषा और हिंदी–माध्यम के द्वारा ज्ञान प्राप्त करें और काम करना, साथ–साथ मिलकर जीना सीखें। भारत की स्वतंत्रता और समग्रता को समझते हुए हिंदी और भारतीय भाषाओं को पढ़ने वाले विद्यार्थी अपने व्यक्तित्वों का विकास करें। हिंदी, संपर्क–भाषा, शिक्षा–माध्यम और सेवा–माध्यम के रूप में विकसित हों। हिंदी के माध्यम से भारतीय भाषाओं का संबंध सुदृढ़ बनें।

प्रधान संपादक

साक्षात्कार

वर्तमान में चिकित्सा एवं शिक्षा का व्यापारीकरण दुर्भाग्यपूर्ण : डॉक्टर मोहन गुप्ता

(प्रसिद्ध चिकित्सक व समाजसेवी डॉ. गुप्ता से 'संकल्य' के संपादक डॉ. शशिकांत मिश्र की बातचीत)

गृहस्थी होने के बावजूद संन्यासी–सा जीवन जीते हुए स्वयं के जीवन को समाज सेवा में समर्पित कर अपार आनंद का अनुभव करने वाले हैदराबाद के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉक्टर मोहन गुप्ता जी के अंतर्मन में छिपे कई रहस्यों को खोलने की कोशिश बातचीत के दौरान 'संकल्य' के संपादक डॉ. शशिकांत मिश्र ने की है। नीचे प्रस्तुत है उन रहस्यों के कुछ अंश.....

प्रश्न : डॉक्टर साहब नमस्ते। त्रैमासिक पत्रिका 'संकल्य' की ओर से आपका हार्दिक स्वागत व अभिनंदन। आप पेशे में चिकित्सक हैं। क्या आप सबसे पहले हमारे पाठकों को अपना जन्म, शिक्षा–दीक्षा के बारे में बताएँगे?

उत्तर : जी, नमस्कार। हिंदी की प्रसिद्ध पत्रिका 'संकल्य' एवं इस पत्रिका के समस्त पाठकों का आभार। आपने सही कहा कि मेरा व्यवसाय चिकित्सा है और विस्तार से कहूँ, तो मैं आधुनिक चिकित्सा विज्ञान या एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति से प्रशिक्षित शल्य–चिकित्सक हूँ। मेरा जन्म दक्षिण भारत के निजामाबाद शहर में हुआ। मेरे माता–पिता का नाम राधादेवी गुप्ता और ज्ञानचंद गुप्ता था एवं हमारा पारिवारिक व्यवसाय मिठाई एवं रेस्टौरेंट का था। बापू (मेरे पिताजी) अपनी मेधा, बहुआयामी व्यक्तित्व और मेहनती स्वभाव के कारण अत्यंत लोकप्रिय थे, अम्मा (मेरी माताजी) ने हालांकि बहुत ज्यादा औपचारिक पढ़ाई नहीं की थी। वह कई भाषाओं में पारंगत थीं एवं संस्कारों विशेषकर चरित्र की दृढ़ता पर बहुत विश्वास करती थी। माता–पिता एवं परिवार के अन्य वरिष्ठ सदस्यों की इच्छानुसार एवं देखरेख में मेरी शिक्षा–दीक्षा हुई, मैं जो भी हूँ, इन सबकी प्रेरणा से ही हूँ।

प्रश्न : आपकी मातृभाषा हिंदी है तथा आपकी प्रारंभिक शिक्षा भी हिंदी माध्यम से हुई है तथा हिंदी माध्यम से आपकी पढ़ाई होने के बावजूद आप एमबीबीएस की ओर कैसे आये?

उत्तर : मुझे सदैव इस बात का गर्व रहा है कि मेरी मातृभाषा हिंदी है, पर इसका ये अर्थ कदापि नहीं है कि मैं किसी भी और भाषा को कमतर आँकता हूँ। सिर्फ आरंभिक ही नहीं, अपितु मेरी मध्यवर्ती (इंटरमीडिएट) तक की शिक्षा न सिर्फ हिंदी माध्यम से, बल्कि हिंदी शब्दावली में हुई है। उदाहरण के लिए